I.G.N.O.U. Based

NEERAJ®

E.H.I.-6

चीन और जापान का इतिहास :1840–1949

(History of China and Japan: 1840-1949)

By: Dr. Pratibha

Question Bank Cum Chapterwise Reference Book
Including **Many Solved Question Papers**

NEERAJ PUBLICATIONS
(Publishers of Educational Books)
(An ISO 9001 : 2008 Certified Company)

Sales Office:
1507, Ist Floor, Nai Sarak, Delhi - 6
Ph.: 011-23260329, 45704411, 23244362, 23285501
E-mail: info@neerajignoubooks.com
Website: www.neerajignoubooks.com

MRP ₹ 200/-

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

Sales Office : **1507, 1st Floor, Nai Sarak, Delhi-110 006**
E-mail: **info@neerajignoubooks.com**
Website: **www.neerajignoubooks.com**

Reprint Edition with Updation of Sample Question Paper Only	*Typesetting by:* Competent Computers	*Printed at:* Novelty Printer

Notes:

1. *For the best & upto-date study & results, please prefer the recommended textbooks/study material only.*
2. This book is just a Guide Book/ Reference Book published by *NEERAJ PUBLICATIONS based on the suggested syllabus by a particular Board /University.*
3. *The information and data etc. given in this Book are from the best of the data arranged by the Author, but for the complete and upto-date information and data etc. see the Govt. of India Publications/textbooks recommended by the Board/University.*
4. *Publisher is not responsible for any omission or error though every care has been taken while preparing, printing, composing and proof reading of the Book. As all the Composing, Printing, Publishing and Proof Reading etc. are done by Human only and chances of Human Error could not be denied. If any reader is not satisfied, then he is requested not to buy this book.*
5. *In case of any dispute whatsoever the maximum anybody can claim against NEERAJ PUBLICATIONS is just for the price of the Book.*
6. *If anyone finds any mistake or error in this Book, he is requested to inform the Publisher, so that the same could be rectified and he would be provided the rectified Book free of cost.*
7. *The number of questions in NEERAJ study materials are indicative of general scope and design of the question paper.*
8. *Question Paper and their answers given in this Book provide you just the approximate pattern of the actual paper and is prepared based on the memory only. However, the actual Question Paper might somewhat vary in its contents, distribution of marks and their level of difficulty.*
9. *Any type of ONLINE Sale/Resale of "NEERAJ BOOKS/NEERAJ IGNOU BOOKS" published by "NEERAJ PUBLICATIONS" on Websites, Web Portals, Online Shopping Sites, like Amazon, Flipkart, Ebay, Snapdeal, etc. is strictly not permitted without prior written permission from NEERAJ PUBLICATIONS. Any such online sale activity by an Individual, Company, Dealer, Bookseller, Book Trader or Distributor will be termed as ILLEGAL SALE of NEERAJ IGNOU BOOKS/NEERAJ BOOKS and will invite legal action against the offenders.*
10. *Subject to Delhi Jurisdiction only.*

© Reserved with the Publishers only.

Spl. Note: *This book or part thereof cannot be translated or reproduced in any form (except for review or criticism) without the written permission of the publishers.*

How to get Books by Post (V.P.P.)?

If you want to Buy NEERAJ IGNOU BOOKS by Post (V.P.P.), then please order your complete requirement at our Website ***www.neerajignoubooks.com****. You may also avail the 'Special Discount Offers' prevailing at that Particular Time (Time of Your Order).*

To have a look at the Details of the Course, Name of the Books, Printed Price & the Cover Pages (Titles) of our NEERAJ IGNOU BOOKS You may Visit/Surf our website ***www.neerajignoubooks.com.***

No Need To Pay In Advance, the Books Shall be Sent to you Through V.P.P. Post Parcel. All The Payment including the Price of the Books & the Postal Charges etc. are to be Paid to the Postman or to your Post Office at the time when You take the Delivery of the Books & they shall Pass the Value of the Goods to us by Charging some extra M.O. Charges.

We usually dispatch the books nearly within 4-5 days after we receive your order and it takes Nearly 5 days in the postal service to reach your Destination (In total it take atleast 10 days).

NEERAJ PUBLICATIONS

(Publishers of Educational Books)

(An ISO 9001 : 2008 Certified Company)

1507, 1st Floor, NAI SARAK, DELHI - 110006

Ph. 011-23260329, 45704411, 23244362, 23285501

E-mail: **info@neerajignoubooks.com** *Website:* **www.neerajignoubooks.com**

CONTENTS

चीन और जापान का इतिहास : 1840-1949

(History of China and Japan: 1840–1949)

Question Bank – (Previous Year Solved Question Papers)

Question Paper—June, 2019 (Solved)	1-3
Question Paper—December, 2018 (Solved)	1-4
Question Paper—June, 2018 (Solved)	1-2
Question Paper—December, 2017 (Solved)	1-3
Question Paper—June, 2017 (Solved)	1-3
Question Paper—December, 2016 (Solved)	1-3
Question Paper—June, 2016 (Solved)	1-3
Question Paper—December, 2015 (Solved)	1-2
Question Paper—June, 2015 (Solved)	1-3
Question Paper—December, 2014 (Solved)	1-3
Question Paper—June, 2014 (Solved)	1-2
Question Paper—December, 2013 (Solved)	1
Question Paper—June, 2013 (Solved)	1-2
Question Paper—December, 2012 (Solved)	1-3
Question Paper—June, 2012 (Solved)	1-3
Question Paper—June, 2011 (Solved)	1-2
Question Paper—June, 2010 (Solved)	1-2
Sample Question Paper (Solved)	1–8

S.No.	***Chapterwise Reference Book***	*Page*

समाज, राज्यतंत्र और अर्थव्यवस्था

1.	देश और लोग (पूर्वी एशिया)	1
2.	समाज एवं राजनीति : चीन	4
3.	समाज और राजनीति : जापान	7
4.	पारम्परिक अर्थव्यवस्था : चीन और जापान	10
5.	धर्म एवं संस्कृति : चीन और जापान	14

S.No.	Chapter	Page
	पश्चिमी साम्राज्यवाद	
6.	चीन में अफीम युद्ध	19
7.	असमान सन्धि प्रणाली–चीन	23
8.	जापान और पश्चिम (मेजी पुनःस्थापना तक)	26
	जापान : आधुनिकीकरण की ओर संक्रमण	
9.	सामन्तवाद का पतन और मेजी की पुनर्स्थापना	29
10.	जापान में आधुनिकीकरण-I	33
11.	जापान में आधुनिकीकरण–II	37
12.	जापान में आधुनिकीकरण–III	40
	विद्रोह, सुधार और क्रांति	
13.	ताइपिंग विद्रोह	43
14.	बॉक्सर विद्रोह	48
15.	स्वयं सुदृढ़ीकरण आन्दोलन और सौ दिनों के सुधार	51
16.	जापान में राजनीतिक सुधार	55
17.	1911 की चीनी क्रान्ति	58
	विदेशी सम्बन्ध	
18.	मेजी जापान–I	62
19.	मेजी जापान–II	65
20.	जापान और प्रथम विश्व युद्ध	69
21.	चीन और प्रथम विश्व युद्ध	72
	प्रथम विश्व युद्ध के बाद जापान	
22.	राजनीतिक दलों का उदय	75
23.	सैन्यवाद का उदय	78

S.No.	Chapter	Page
24.	प्रथम विश्व युद्ध के बाद की अर्थव्यवस्था	81
25.	दूसरे विश्व युद्ध तक जापानी साम्राज्यवाद	84
26.	द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात जापान	87
	क्रांति के बाद का चीन	
27.	क्रांति के पश्चात के घटनाक्रम, 1911-1917	90
28.	सांस्कृतिक आन्दोलन	93
29.	विदेशी पूंजी निवेश और नव वर्ग का उदय	96
30.	राष्ट्रवाद का उदय	99
	चीन में कम्युनिस्ट आन्दोलन	
31.	चीनी कम्युनिस्ट पार्टी (सी.पी.सी.) का निर्माण	101
32.	संयुक्त मोर्चा	104
33.	क्यांगसी सोवियत अनुभव	107
34.	चीनी कम्युनिस्ट पार्टी और जापान के साथ युद्ध	110
35.	चीन की क्रांति	113

■■

Sample Preview of the Solved Sample Question Papers

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER
(June – 2019)

(Solved)

चीन और जापान का इतिहास : 1840–1949

समय : 3 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 100*

*नोट : **खण्ड–I** में से कोई **दो** प्रश्न **खण्ड–II** में से कोई **चार** तथा **खण्ड–III** में से काई **दो** संक्षिप्त टिप्पणियाँ करने हैं।*

खण्ड–I

प्रश्न 1. अफीम युद्धों के कारणों पर एक आलोचनात्मक टिप्पणी लिखिए। इनका क्या महत्त्व था?

उत्तर–देखें अध्याय-6, पृष्ठ-19, 'परिचय', पृष्ठ-21, प्रश्न 3, पृष्ठ 20, प्रश्न 1 (बोध प्रश्न 2)

प्रश्न 2. क्या 1868 का मेजी पुनरुद्धार (Meiji Restoration) एक क्रांति था? विवेचना कीजिए।

उत्तर–देखें अध्याय-9, पृष्ठ-29, 'परिचय',

इसे भी देखें–जापान की पुनर्स्थापना इसलिए महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि इससे गैर-औद्योगीकृत समाज को एक आधुनिक राष्ट्र में बदल दिया। नेस्तुओ नाजीता ने इस बदलाव को इस दृष्टि से देखा है–तोकुगावा में चिन्ता के विषय थे, समाज को व्यवस्थित करना और लोगों को बचाना, लेकिन मेजी के लिए मुख्य रुचि सम्पन्न देश, सशक्त सेना हो गयी। लोगों को बचाने के स्थान पर उन्हें संगठित करने का विचार मेजी के साथ आया।

इस प्रकार, मेजी पुनर्स्थापना की उथल-पुथल की छानबीन कई परिप्रेक्ष्यों में की गयी है। यद्यपि ई.एच. नार्मन की मार्गदर्शक कृति ने अनेक विद्वानों को प्रभावित किया है कि मेजी पुनर्स्थापना की स्थिति के पीछे निम्न सामुराइ और सौदागरों में गठबंधन का हाथ कम था, फिर विस्तृत अध्ययन के लिए इस सिद्धान्त को प्रमाणित करना कठिन लगता है। अत: 1868 का मेजी पुनरुद्धार एक क्रांति की श्रेणी में आता है।

प्रश्न 3. जापान के आर्थिक आधुनिकीकरण में राज्य की भूमिका की विवेचना कीजिए।

उत्तर–देखें अध्याय-12, पृष्ठ-40, प्रश्न 2, पृष्ठ-41, प्रश्न 3

प्रश्न 4. 1911 की क्रांति के बाद चीन में 'नव-सास्कृतिक' आंदोलन के उदय के क्या कारण थे? इस आंदोलन में बुद्धिजीवियों की क्या भूमिका थी?

उत्तर–देखें अध्याय-28, पृष्ठ-93, 'परिचय', प्रश्न 1 (बोध प्रश्न 2), पृष्ठ-94, प्रश्न 2 (बोध प्रश्न 3), पृष्ठ-95, प्रश्न 1

खण्ड–II

प्रश्न 5. आत्म-सशक्तिकरण आंदोलन के महत्त्व पर चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-15, पृष्ठ-53, प्रश्न 1 (अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न)

इसे भी देखें–स्वयं सुदृढ़ीकरण आंशिक आधुनिकीकरण की औपचारिक नीति थी। इस नीति को यांगवू डोग आन्दोलन भी कहते हैं। इसका अनुसरण करते हुए खदानों, संचार एवं कपड़ा उद्योग का विकास किया। स्वयं को मजबूत करने के लिए आधुनिक शिक्षा का प्रारम्भ किया। इसके अन्तर्गत विदेशी स्कूलों की स्थापना की गई। शिक्षा के क्षेत्र में नई प्रवृत्तियों का उदय हुआ। पश्चिमी विचारों की ओर चीनियों का झुकाव हुआ परन्तु इस आन्दोलन का विरोध भी होता रहा। यह विरोध तब और बढ़ गया जब नवीन परिवर्तनों को उद्योग, संचार एवं शिक्षा क्षेत्रों में लागू किया गया। नवीनीकरण के परिणाम थोड़े ही समय के लिये रहे। 1894-95 में चीन-जापान युद्ध में चीन की पराजय ने आन्दोलन की असफलता को पूरी तरह से स्पष्ट कर दिया। उपनिवेशीकरण की सम्भावना ने 1898 में सुधार आन्दोलन को जन्म दिया। ये सुधार आन्दोलन सौ दिन के सुधार कहे जाते हैं। कांग यू.वी. सन् यात सेन, यानफू तानसी तोंग सुधार आन्दोलन के प्रमुख विचारक थे। सम्राट गौगशु ने इनका समर्थन किया। विरोधियों में सेनापति और महारानी शामिल थे। सम्राट को बन्दी बना लिया गया और सुधार आन्दोलन को कुचल दिया, पीकिंग विश्वविद्यालय को छोड़कर सभी सुधारों को पलट दिया गया। 1898 में इस सुधार आन्दोलन ने किसी-न-किसी रूप में अपना प्रभाव छोड़ा, जिसके परिणामस्वरूप 1911 की चीनी क्रान्ति की पृष्ठभूमि तैयार हो गई।

प्रश्न 6. चिंग सुधारों पर एक टिप्पणी लिखिए।

उत्तर–आधुनिक चीन के इतिहास में 19वीं सदी एक महत्त्वपूर्ण काल था। साम्राज्यवादी शक्तियों के प्रसार के साथ-साथ

Neeraj Publications www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

आन्तरिक संकट के बढ़ने के कारण चिंग राज्य एवं समाज सुधारों के कार्यक्रम की ओर अग्रसर हुआ। 19वीं सदी के दौरान ये सुधार कार्यक्रम 1860 तथा 1870 के दशकों में तोंगझी पुनर्स्थापना के स्वरूप में वास्तविक तौर पर प्रस्तावित किए गए कार्यक्रमों को भी लांघ गये। ये सुधार कार्यक्रम स्वयं सुदृढ़ीकरण आंदोलन के नाम से जाने गये। चिंग राज्य को मजबूत करने के उद्देश्य से जो सुधार कार्यक्रम शुरू किये गये वे 19वीं सदी के अन्त तक चीनी समाज के व्यापक सुधार के प्रयास में परिवर्तित हो गये। 1898 के सुधार आन्दोलन ने एक तरह से 20वीं सदी के प्रारंभ में उठने वाले क्रांतिकारी विप्लव की आधारशिला रखी और चीनी साम्राज्यिक तन्त्र को धराशयी होने के साथ ही इन सुधार प्रयासों का समापन हुआ।

स्वयं सुदृढ़ीकरण आंशिक आधुनिकीकरण की औपचारिक नीति थी। इस नीति को यांगवू डोग आन्दोलन भी कहते हैं। इसका अनुसरण करते हुए खदानों, संचार एवं कपड़ा उद्योग का विकास किया। स्वयं को मजबूत करने के लिए आधुनिक शिक्षा का प्रारम्भ किया। इसके अन्तर्गत विदेशी स्कूलों की स्थापना की गई। शिक्षा के क्षेत्र में नई प्रवृत्तियों का उदय हुआ। पश्चिमी विचारों की ओर चीनियों का झुकाव हुआ परन्तु इस आन्दोलन का विरोध भी होता रहा। यह विरोध तब और बढ़ गया जब नवीन परिवर्तनों को उद्योग, संचार एवं शिक्षा क्षेत्रों में लागू किया गया। नवीनीकरण के परिणाम थोड़े ही समय के लिये रहे। 1894-95 में चीन-जापान युद्ध में चीन की पराजय ने आन्दोलन की असफलता को पूरी तरह से स्पष्ट कर दिया। उपनिवेशीकरण की सम्भावना ने 1898 में सुधार आन्दोलन को जन्म दिया। ये सुधार आन्दोलन सौ दिन के सुधार कहे जाते हैं। कांग यू.वी. सन् यात सेन, यानफू तानसी तोंग सुधार आन्दोलन के प्रमुख विचारक थे। सम्राट गौगशु ने इनका समर्थन किया। विरोधियों में सेनापति और महारानी शामिल थे। सम्राट को बन्दी बना लिया गया और सुधार आन्दोलन को कुचल दिया, पीकिंग विश्वविद्यालय को छोड़कर सभी सुधारों को पलट दिया गया। 1898 में इस सुधार आन्दोलन ने किसी-न-किसी रूप में अपना प्रभाव छोड़ा, जिसके परिणामस्वरूप 1911 की चीनी क्रान्ति की पृष्ठभूमि तैयार हो गई।

प्रश्न 7. रूसी-जापानी युद्ध के महत्त्व का विश्लेषण कीजिए।

उत्तर–देखें अध्याय-19, पृष्ठ-67, प्रश्न 1

प्रश्न 8. तोकुगावा काल में जापान की सामाजिक संरचना की विवेचना कीजिए।

उत्तर–देखें अध्याय-3, पृष्ठ-7, 'परिचय'

प्रश्न 9. दो विश्व युद्धों के मध्य जापान में सैन्यवाद के उदय के कारणों की चर्चा कीजिए।

उत्तर–देखें अध्याय-23, पृष्ठ-78, 'परिचय'

प्रश्न 10. चीन में द्वितीय संयुक्त मोर्चे की उपलब्धियों की विवेचना कीजिए।

उत्तर–देखें अध्याय-34, पृष्ठ-111, प्रश्न 3

इसे भी देखें–संयुक्त मोर्चे ने जापान के विरुद्ध संघर्ष जारी रखा। साम्यवादियों ने अपने प्रभाव क्षेत्रों में अपनी क्रांतिकारी नीतियों एवं सुधारों को भी जारी रखा। लाल क्षेत्रों में नये समाज की रचना की गई, जिसने जीवन के सम्पूर्ण क्षेत्र को रूपान्तरित कर दिया। सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन की रचना कर सम्पूर्ण जनता का समर्थन प्राप्त कर लिया। 1941 से साम्यवादियों को कठिनाइयों सामना करना पड़ा, किन्तु द्वितीय विश्व युद्ध में जापान के आत्मसमर्पण के साथ चीनी जनता के विरुद्ध लड़े गये लम्बे एवं वीरतापूर्ण संघर्ष का अन्त हुआ। बाह्य शत्रुओं को तो पराजित कर दिया लेकिन क्वोमिंतांग एवं उसके सहयोगियों से रक्षा की जानी बाकी थी।

प्रश्न 11. प्रथम विश्व युद्ध के बाद जापान में आर्थिक विकास पर संक्षेप में चर्चा कीजिए।

उत्तर–1914-18 के प्रथम विश्व युद्ध में जापान को उन्नति और साम्राज्य विस्तार के लिए स्वर्णिम अवसर प्राप्त हुआ। जापान ने अपनी अन्तर्राष्ट्रीय भूमिका में परिवर्तन किया। जापान अपनी क्षेत्रीय स्वाधीनता को बनाये रखते हुए, अपनी अर्थव्यवस्था को बनाते हुए और पश्चिमी देशों से टक्कर लेते हुए, अपने क्षेत्र के भीतर भी विस्तार की नीति को अंजाम दे रहा था।1 विश्व युद्ध के समय जापान की अर्थव्यवस्था परिपक्व हो गई। जापान में कुछ वस्तुओं का उत्पादन बढ़ गया। अपने उत्पादन के लिए वह बाजार हासिल करने में सफल रहा। पोत निर्माण, मशीनरी उत्पादन और अभियान्त्रिकी कौशलों का विकास किया।

इसे भी देखें–अध्याय-20, पृष्ठ-70, प्रश्न 2

प्रश्न 12. 1949 के बाद चीन में कम्युनिस्टों द्वारा लागू किए गए आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक ढांचे की विवेचना कीजिए।

उत्तर–साम्यवादी विजय द्वारा चीन में गणतंत्र की घोषणा के साथ ही इस प्रकार की सरकार बनाई गई। इस गठबंधन में 14 दल या गुट शामिल थे। सरकार में और प्रांतों में उपराज्यपालों के रूप में अनेक गैर-साम्यवादी भी इसमें शामिल थे। यह राजनीतिक ढांचा इस बात का प्रतीक था कि नई सत्ता को व्यापक समर्थन प्राप्त है। सामाजिक गठबंधन की दृष्टि से यह एक प्रकार का संयुक्त मोर्चा था जिसमें मजदूर, किसान और बुर्जुवा वर्ग शामिल था। माओ को जनवादी गणतंत्र को चेयरमैन बनाया गया।

भूमि सुधार–नये शासन में किये गये भूमि सुधार के सम्बन्ध में दो बातें मुख्य थीं–

1. समस्त भूमि को गाँव या जिला में बराबर बाँटना और
2. भूतपूर्व जमींदारों को भूमि का एक छोटा हिस्सा दिया जाना वह भी तब जब वे उस पर कार्य करने के इच्छुक हों।

Neeraj Publications www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

Sample Preview of The Chapter

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

चीन और जापान का इतिहास (1840 - 1949)

(History of China and Japan: 1840-1949)

समाज, राज्यतंत्र और अर्थव्यवस्था

देश और लोग (पूर्वी एशिया)

1

Neeraj Publications www.neerajbooks.com

परिचय

भूमि, प्राकृतिक और भौतिक वातावरण तथा इस धरती पर रहने वाले लोग वे आधारभूत घटक हैं, जिन्होंने पूर्वी एशिया की विरासत को एक विशेष स्वरूप प्रदान किया है। पूर्वी एशिया की समग्रता इसके विकास में निहित है, इसकी संस्कृति की जड़ें वर्षों पूर्व विकसित सभ्यताओं में दिखाई पड़ती हैं। प्राचीन सभ्यताओं में से एक भारत गंगा क्षेत्र की संस्कृति ने भी इसके विकास में अहम भूमिका निभायी है। पूर्वी एशिया का क्षेत्र इतना विस्तृत है कि यह एक उपमहाद्वीप के आकार का कहा जा सकता है। इसके क्षेत्र को तीन वर्गों में विभाजित किया जा सकता है–

(i) पूर्वी प्रायद्वीपीय क्षेत्र,

(ii) दक्षिण-पूर्व का क्षेत्र और

(iii) एक केन्द्रीय मुख्य भूमि क्षेत्र।

विशिष्ट अर्थों में पूर्वी एशिया अपने पूर्वी ओर पूर्वी साइबेरिया, चीन, मंगोलिया, उत्तरी और दक्षिणी कोरिया और जापान जैसे देशों को समेटे है।

इसमें दक्षिण-पूर्वी एशिया, फिलीपीन्स, इण्डोनेशिया, मलय प्रायद्वीप और भारतीय उपमहाद्वीप को भी शामिल किया जा सकता है। जलवायु की विशिष्टता के कारण पूर्वी एशिया की कृषि व्यवस्था यूरोपीय कृषि व्यवस्था से बिल्कुल भिन्न है। अपने पर्यावरण के साथ क्रिया-प्रतिक्रिया के फलस्वरूप पूर्वी एशिया में लोगों ने अपनी कुछ आदतें विकसित की हैं, जैसे–साज-सज्जा की अनोखी शैली, सुसंस्कृत प्रथाएँ और खान-पान की आदतें। समाज में परिवार को महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। तानाशाही व्यवस्था ने राजनीतिक और पारिवारिक दोनों क्षेत्रों में सामाजिक व्यवस्था के लिए आधार बनाया। पूर्वी एशिया के लोगों की अपनी विशेषताएँ हैं। यहाँ के निवासियों के क्षेत्रों में का विभाजन नस्ल के आधार पर न होकर भाषा के आधार पर है। चीनी-तिब्बत परिवार और आस्ट्रोनीशियाई परिवार इसके उदाहरण हैं। पूर्वी एशिया को ही मंगोलाइयों का निवास माना जाता है। पूर्वी एशिया के क्षेत्रों में एक-दूसरे क्षेत्रों के साथ भूखण्ड के पार और समुद्री रेशम मार्ग के पार ऐतिहासिक सम्पर्क रहा है। इसी क्षेत्र से चीनी सभ्यता और संस्कृति पड़ोस के क्षेत्रों तक फैली। कोरिया से होकर जापान में और दक्षिण में भारत चीन प्रायद्वीप और इण्डोनेशिया में विस्तार हुआ और पूर्वी एशिया के चारों ओर स्थित देशों के साथ सांस्कृतिक सम्बन्ध स्थापित हुए। चीन समग्र पूर्वी एशियाई सभ्यता का केन्द्र

www.neerajbooks.com

बिन्दु रहा और 19वीं शताब्दी तक बना रहा। यहाँ से जापान ने एक प्रधान राजनीतिक भूमिका अदा की। समय बीतने के साथ पूर्वी एशिया टूटने लगा और इसके कुछ भाग पड़ोसी राज्यों और क्षेत्रों का हिस्सा बन गए।

बोध प्रश्न–1

प्रश्न 1. निम्नलिखित में से कौन-से वक्तव्य सही (✓) हैं और कौन-से गलत (✗)? निशान लगाएँ–

(i) भारत गंगा क्षेत्र की संस्कृति पूर्व एशिया तक नहीं फैली।

(ii) व्यापक क्षेत्रीय सन्दर्भ में, पूर्वी एशिया में दक्षिण-पूर्वी एशिया भी आ जाता है।

(iii) मध्यवर्ती मुख्य भूमि क्षेत्र में बड़ी नदी व्यवस्थाओं का विकास हुआ।

उत्तर–*(i)* गलत, *(ii)* सही, *(iii)* सही।

प्रश्न 2. व्यापक क्षेत्रीय सन्दर्भ में आप पूर्वी एशिया को कहाँ रखते हैं?

उत्तर–व्यापक क्षेत्रीय सन्दर्भ में पूर्वी एशिया उपमहाद्वीप के आकार का है। इस महाद्वीपीय आकार की विशालता को समझने के लिए इसके क्षेत्र को तीन भागों में बाँटा जा सकता है–

1. पूर्वी प्रायद्वीपीय क्षेत्र
2. दक्षिण पूर्वी क्षेत्र और
3. एक केन्द्रीय मुख्य भूमि क्षेत्र।

पूर्वी प्रायद्वीपीय क्षेत्र में तट से लगी पर्वत श्रृंखलाएँ दक्षिण में बेरिंग जलडमरू मध्य से ओखोत्स्क सागर में दक्षिण-पश्चिमी सिरे तक फैली हैं। दक्षिण-पूर्व का क्षेत्र पूर्वी एशिया का ही अंग है। इसके मध्यवर्ती क्षेत्र में भी लम्बी-चौड़ी भूमि का विस्तार है। इस प्रकार व्यापक रूप से देखने पर स्पष्ट होता है कि पूर्वी एशिया, एशिया महाद्वीपों, के वृहत्तर भाग के रूप में है, ऐसा यह अपने भौगोलिक सम्पर्कों भाषायी और सांस्कृतिक मूल्यों के कारण है। सांस्कृतिक रूप से यह चीन की प्राचीन सभ्यता से जुड़ा है। दक्षिण-पूर्वी एशिया और मध्य एशिया के माध्यम से पूर्वी एशिया का प्रभाव बाहरी दुनिया तक फैला है।

बोध प्रश्न–2

प्रश्न 1. निम्नलिखित में से कौन-से वक्तव्य सही (✓) हैं और कौन-से गलत (✗) हैं निशान लगाएँ–

(i) पूर्वी एशिया में मनुष्यों का विभाजन मुख्य रूप से भाषा के आधार पर है।

(ii) परिवार-व्यवस्था तानाशाही नहीं थी।

(iii) पूर्वी एशिया और इसके पड़ोसी क्षेत्रों के बीच कोई आर्थिक सम्बन्ध नहीं रहा।

(iv) चीन पूर्वी एशियाई सभ्यता का केन्द्र बिन्दु रहा है।

उत्तर–*(i)* सही, *(ii)* गलत, *(iii)* गलत, *(iv)* सही।

प्रश्न 2. परिवार व्यवस्था की विशेषताएँ बताइए।

उत्तर–परिवार समाज की इकाई के रूप में है। परिवार में प्रत्येक व्यक्ति को सुरक्षा मिलती है। एक इकाई के रूप में परिवार आज भी व्यक्तिवादी है। इसमें एक श्रेणीबद्धता है। हर सदस्य का अपना स्थान है, उसे उसी के अनुरूप रहना पड़ता है। वे पूर्वजों की पूजा करते हैं तथा अपने से बड़ो का सम्मान करते हैं। परिवार के सदस्य परम्पराओं का निर्वहन करते हैं। तानाशाही परिवार की प्रमुख विशेषता रही है। इस तानाशाही ने ही राजनीतिक और पारिवारिक क्षेत्रों में सामाजिक आधार बनाने का काम किया। यद्यपि पिता को परिवार में सर्वोच्च स्थान प्राप्त था किन्तु परिवार में प्रत्येक व्यक्ति का अपना स्थान था।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न

प्रश्न 1. पूर्वी एशिया और भारतीय उपमहाद्वीप के मध्य सामाजिक अन्तःक्रिया को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–यात्रियों व सौदागरों के द्वारा भारत गंगा क्षेत्र की संस्कृति दो भागों–केन्द्रीय एशिया व समुद्री मार्ग से चीन, कोरिया और जापान तक फैली, वहीं चीन की सभ्यता और संस्कृति समुद्री मार्ग से भारत पहुँची। इस तरह पूर्वी एशिया और भारतीय उपमहाद्वीप के बीच सामाजिक सम्बन्ध स्थापित हुए तथा सभ्यता और संस्कृति का आदान-प्रदान हुआ। उदाहरण के लिए बौद्ध धर्म का उदय भारत में हुआ लेकिन वह चीन और जापान में खूब फला-फूला। इसी प्रकार लिखने की कला चीन से भारत पहुँची। भारत में मंगोल जाति के लोग पूर्वी एशिया से ही आए थे, जिन्होंने भारत की सामाजिक व्यवस्था को प्रभावित किया था। इस प्रकार पूर्वी एशिया और भारतीय उपमहाद्वीप के मध्य ऐतिहासिक सम्पर्क का प्रभाव एक-दूसरे की सामाजिक व्यवस्था पर आज भी देखा जा सकता है।

प्रश्न 2. किन विशेषताओं के कारण पूर्वी एशिया की जलवायु विशिष्ट स्थान रखती है?

उत्तर–पूर्वी एशिया की सांस्कृतिक विशिष्टता में जलवायु का बड़ा योगदान है। भारत की जलवायु की तरह एशिया के बड़े भू-भाग को निर्धारित करती है। जाड़ों में मध्य एशिया में ठण्डी हवाएँ चलती हैं लेकिन गर्मी में इसका उल्टा होता है। इन अक्षांशों पर होने वाली भारी वर्षा और तेज धूप के कारण गहन खेती होती है। कई स्थानों पर प्रतिवर्ष दो फसलें होती हैं। पूर्वी एशिया की

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

जलवायु में असमानता पाई जाती है। महाद्वीप में चलने वाली हवाएँ जापान की जलवायु को शीतोष्ण बनाती हैं। साइबेरिया में अधिक ठण्ड पड़ती है। पूर्वी और पश्चिमी तट पर बहने वाली गर्म लहर एशियाई महाद्वीपीय व्यवस्था के प्रभाव को कम कर देती है। मिट्टी लाल रंग की होती है। विशिष्ट जलवायु के कारण ही पूर्वी एशिया की कृषि व्यवस्था यूरोप की कृषि व्यवस्था से अलग महत्त्व रखती है। चावल और सोयाबीन पूर्वी एशिया की प्रमुख फसलें हैं।

प्रश्न 3. चीन को पूर्वी एशियाई सभ्यता का केन्द्रबिन्दु किस आधार पर कहा जाता है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–अपनी भौगोलिक स्थिति के कारण चीन (मध्य राज्य) हमेशा छोटे कमजोर राज्यों के केन्द्र में रहा। शांसी, शेसी और होनान वाले भू-भाग चीनी बस्ती और संस्कृति में सबसे पुराने क्षेत्र हैं। इसी क्षेत्र में पूर्वी एशिया में सर्वप्रथम शहरों और राज्यों की बुनियाद पड़ी और लम्बे समय तक यही चीनी एकता राज्य की विशेषता का प्रतीक रही। चीन दक्षिण-पूर्वी एशियाई क्षेत्र के सम्पर्क में आता है जो पश्चिमी, दक्षिणी और दक्षिण एशिया के सांस्कृतिक प्रभावों का संगम रहा। यहाँ से ही चीनी लोग, उनकी प्रथाएँ और उनकी संस्कृति पड़ोसी क्षेत्रों में फैली। यह चीनी विशेषता ही थी, जिसने पूर्वी एशिया के दूसरे देशों के साथ मजबूत सम्बन्ध बनाने में मदद की।

■■

Neeraj Publications
www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

समाज एवं राजनीति : चीन

2

परिचय

चीन की सामाजिक एवं राजनीतिक व्यवस्था कुछ विकासात्मक परिवर्तनों के साथ दो हजार वर्षों तक विशाल क्षेत्र, जनसंख्या और अनेकताओं के साथ मूल रूप में बनी रही। इस दृष्टि से यह मानव सभ्यता की एक अद्‌भुत देन थी। परम्परागत चीन की प्रमुख विशेषता इसका जटिल कृषि समाज था। समाज में जमींदार, अभिजात वर्ग का वर्चस्व था, मूलभूत विभाजन किसानों और जमींदारों के मध्य था। व्यापारी वर्ग तीसरे स्थान पर था। 10वीं शताब्दी से व्यापारिक कृषि एवं अन्तरक्षेत्रीय व्यापार की प्रचुर मात्रा में वृद्धि ने चीनी समाज एवं राज्य के चरित्र को व्यापक रूप से प्रभावित किया। अब शासक वर्ग सम्पत्ति को कृषि से ही नहीं व्यापार से भी प्राप्त करने लगा। यूरोप की औद्योगिक क्रान्ति तक चीन विश्व के सबसे विकसित समाजों में से था। जटिल कृषि समाज के आधार पर चीन में उच्च विकसित, केन्द्रीयकृत राज्यतन्त्र का सुदृढ़ आंतरिक संगठन था तथा इसकी गतिविधियों में विविधता थी। पारम्परिक चीन में सामाजिक व राजनीतिक व्यवस्था कन्फ्यूशियसवादी दर्शन पर आधारित थी। संभ्रांत वर्ग कन्फ्यूशियस दर्शन की गहन शिक्षा प्रक्रिया से होकर गुजरता था। चीनी राज्य को अनोखा माना जा सकता है। इसके अनुसार सम्राट को सर्वोच्च स्थान प्राप्त था तथा वह राजनीतिक व्यवस्था का संरक्षक था। नौकरशाही चीनी राजनीतिक व्यवस्था का दूसरा महत्त्वपूर्ण स्तम्भ था। चीन का एकीकरण सम्राट चिन-शी-हुआंग के द्वारा 221 ई. पू. में किया गया। तभी से प्रशासन का संचालन नौकरशाही के द्वारा किया जाता था। यह नौकरशाही आधुनिक विश्व से पूर्व किसी भी नौकरशाही की अपेक्षा अपनी संरचना एवं कार्यों में अधिक स्पष्ट, अधिक विकसित और अधिक तर्कसंगत थी। इस साम्राज्य ने पूर्वी एशिया में किन्हीं गम्भीर चुनौतियों का सामना नहीं किया किन्तु 19वीं शताब्दी में चीन में भी सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्था में संकट के बीजों का रोपण हो चुका था। प्रशासन में भ्रष्टाचार वंशानुगत समस्या, सैन्य कमजोरियाँ, आर्थिक संकट और जनसंख्या के बढ़ते दबाव ने साम्राज्य को कमजोर किया। देश के अन्दर नवीन शक्तियाँ उभर रहीं थीं, उन्होंने परम्परागत व्यवस्था को और कमजोर किया। जब चीन पर पश्चिमी साम्राज्य का प्रभाव पड़ा तो वह उनकी गतिविधियों का सामना नहीं कर सका और अन्ततः इसका पतन हो गया।

बोध प्रश्न–1

प्रश्न 1. निम्नलिखित में कौन-सा सही (✓) या गलत (×) है? निशान लगाएँ–

(i) चीन का समाज एक साधारण कृषि समाज था।

(ii) जमींदार अपने खेतों पर स्वयं खेती करते थे।

(iii) संभ्रांत वर्ग स्थानीय लोगों तथा प्रशासन के बीच मध्यस्थता का कार्य करता था।

(iv) सामाजिक पदानुक्रम में किसानों की अपेक्षा व्यापारी का नीचा स्थान था।

उत्तर–*(i)* गलत, *(ii)* गलत, *(iii)* सही, *(iv)* सही।

प्रश्न 2. किसानों की दशा का विवरण लगभग 100 शब्दों में कीजिए।

उत्तर–चीनी समाज में किसानों की स्थिति एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र और एक काल से दूसरे काल में भिन्न-भिन्न थी। सैद्धान्तिक रूप से चीनी किसानों में भू-दास नहीं थे, लेकिन वास्तव में उनकी दशा भू-दासों से अच्छी भी नहीं थी। इसका मुख्य कारण था तीसरी से छठी शताब्दी तक विस्थापन के बाद चीन में केन्द्रीय एवं दक्षिणी क्षेत्र तो पूर्ण रूप से बस गए परन्तु उपलब्ध भूमि की मात्रा में कोई विशेष वृद्धि नहीं हुई। आए दिन बाढ़, सूखा और अन्य प्राकृतिक आपदाओं ने किसानों की दरिद्रता को और बढ़ाया। इसके परिणाम उस समय और भयंकर होते गए जब शाही सरकार कमजोर होती थी।

इसका परिणाम यह हुआ कि दरिद्रता और असुरक्षा के कारण किसान जमींदारों के काश्तकार हो गए और अपनी फसल का आधा भाग भू-लगान के रूप में जमींदारों को देने लगे। किसान

Neeraj Publications www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com